

हनुमान

For Students





COLLECTION OF VARIOUS
-> **HINDUISM SCRIPTURES**
-> **HINDU COMICS**
-> **AYURVEDA**
-> **MAGZINES**

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with

By
Avinash/Shashi

**(creator of
hinduism
server)**



KAPWING

वीर हनुमान



सुरुचि प्रकाशन

केशव कुंज, झण्डेवाला, नई दिल्ली - 110055

Copyrighted material

वीर हनुमान

लेखक : के. के. शानमुखन

अनुवादक : ओम प्रकाश शर्मा

प्रकाशक

सुरुचि प्रकाशन

केशव कुंज, झण्डेवाला,

नई दिल्ली - 110055

दूरभाष : 011-23514672, 23634561

E-mail : suruchiprakashan@gmail.com

Website : www.suruchiprakashan.in

© सुरुचि प्रकाशन

द्वितीय संस्करण : फरवरी, 2017

मूल्य : ₹ 40

पृष्ठ संयोजक : अमित कुमार

मुद्रक : बुलबुल प्रिंटिंग प्रेस

ISBN : 978-93-84414-46-7

विषय-सूची

क्र.	अध्याय	पृष्ठ
1.	हनुमान का जन्म	07
2.	बाली और रावण	10
3.	बाली-सुग्रीव शत्रु के रूप में	13
4.	राम व लक्ष्मण साथ हनुमान की भेंट	17
5.	सीता की खोज आरंभ	21
6.	हनुमान की जामवंत से भेंट	25
7.	हनुमान का लंका में प्रवेश	30
8.	हनुमान की सीता से भेंट	35
9.	हनुमान की रावण से भेंट एवं संवाद	44
10.	हनुमान की रामेश्वरम् में वापसी	49
11.	युद्ध की तैयारी आरंभ	52
12.	सीता की अग्नि-परीक्षा	65
13.	राम-भरत का शुभ पुनर्मिलन	69
14.	उपसंहार	72

विद्यार्थियों के लिए हनुमान

विषय-प्रवेश

हिन्दू-दर्शन के अनुसार रिद्धि एवं सिद्धि (सौभाग्य एवं सफलता) के दो प्रमुख दाता हैं। वे हैं— श्री गणेश एवं श्री हनुमान।

हनुमान संकट-मोचक (संकटों से बचाने वाले) हैं। जो विद्यार्थी अपने जीवन में कुछ उच्च आदर्श सामने रखते हैं, उन्होंने हनुमान जी में अगाध श्रद्धा व दृढ़ विश्वास रखकर उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। हनुमान जी किसी कार्य का बीड़ा उठाते (काम करने का संकल्प लेते) थे, उस कार्य को सफलता पूर्वक करके ही दम लेते थे। वे सदा साहसिक (संकट-पूर्ण) कार्य ही हाथ में लेते थे तथा उसमें सफलता प्राप्त करते थे। यह कहावत तो आपने सुनी ही होगी! “जो गिरने से (असफलता से) डरते हैं, वे कभी ऊपर नहीं उठ सकते।”

हनुमान एक साथ अनेक सद्गुणों - वीरता, बुद्धिमत्ता, दृढ़ निश्चय, सादगी, निर्भयता आदि के प्रतीक हैं।

ऐसा कहते हैं कि विश्व में 40 वर्ष से कम आयु वाले युवकों की कुल जनसंख्या का 60% भारतीय युवक हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि संपूर्ण विश्व भारतीय नवयुवकों के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में काम करेगा; परंतु विचार का विषय यह है कि क्या आज हमारे

नव युवक इस महान दायित्व को संभालने के योग्य हैं? क्या उन्हें इस योग्य बनाने के लिए योग्य प्रशिक्षण देने की कोई व्यवस्था है?

हमारी भावी युवा पीढ़ी को साहसिक कार्य करने की भावना, चुनौतियों का साहसपूर्ण ढंग से सामना करने की क्षमता (योग्यता), अत्यंत विकट परिस्थितियों में भी संघर्ष करने की मानसिकता आदि अनेक अपरिहार्य (अत्यंत आवश्यक) गुणों में से कुछ गुण अवश्य ही ग्रहण करने होंगे। वे इन सभी गुणों को हनुमान जी के जीवन से सीख सकते हैं।



1

हनुमान का जन्म

राक्षसों के राजा रावण ने अत्यंत कठोर तपस्या के द्वारा भगवान विष्णु एवं भगवान शिव को प्रसन्न करके 'अजेय' रहने का वरदान प्राप्त कर लिया। उसने अपने पुत्र मेघनाद को साथ लेकर देवताओं पर आक्रमण करके उन्हें पराजित कर दिया। उसने देवों, गंधर्वों, ऋषि-मुनियों पर घोर अत्याचार किये। अत्याचारों की सीमा पार होने पर सभी पीड़ित मिलकर 'बैकुंठ धाम' पहुँचे तथा भगवान विष्णु को अपनी व्यथा-कथा (दर्दभरी कहानी) सुनाई। भगवान विष्णु ने उन्हें सान्त्वना दी तथा आश्वासन दिया (विश्वास दिलाया) कि वह स्वयं तथा देवी पार्वती राम एवं सीता के रूप में जन्म लेकर रावण की मृत्यु का कारण बनेंगे। उन्होंने देवताओं से वानर रूप में पृथ्वी लोक पर जन्म लेने एवं आवश्यकता पड़ने पर उनकी सहायता के लिए तैयार रहने के लिए प्रार्थना की। भगवान विष्णु की योजना के अनुसार देवताओं ने वानरों के रूप में पृथ्वी पर जन्म धारण कर लिया।

वानर राज केसरी तथा उनकी पत्नी अंजना ने पुत्र प्राप्ति का वरदान पाने के लिए भगवान शिव की आराधना की। काफी समय बीत जाने पर उन्होंने 'पवन देव' से प्रार्थना की कि वह 'शिव

जी' के पास जाकर मध्यस्थता करें। उनकी प्रार्थना स्वीकार करते हुए पवन देव कैलाश पधारे तथा शिवजी से केसरी व अंजना की आराधना स्वीकार कर उन्हें वांछित वरदान देने की कृपा करने के लिए प्रार्थना की।

माँ पार्वती व भगवान शिव ने केसरी व अंजना की प्रार्थना स्वीकार की, और उनके वरदान से अंजना ने वानर बालक को जन्म दिया।



ज्योंहि बालक ने जन्म लिया, उसने अपनी आँखें खोलकर कुछ देर के लिए पलकें झपकाईं। उसने पूर्व दिशा में ताजे-चमकते लाल फल के रूप में उगते हुए सूर्य को देखा। उसे भूख लग रही थी। सूर्य को फल समझकर उसने आकाश में तेज उड़ान भरी और उस फल (सूर्य) को निगलने (खाने) के लिए उसके समीप पहुँच गया। इस दृश्य से भयभीत होकर देवराज इंद्र ने शिशु पर अपने घातक शस्त्र 'वज्र' से प्रहार किया। प्रहार शिशु की हनु (ठोड़ी) पर हुआ। शिशु तुरंत मूर्छित हो गया।

शिशु को ऐसी आपात् स्थिति में देखकर क्रोधित पवन देव उसे लेकर पाताल में अज्ञात स्थान पर छिप गए।

अकस्मात् वायु न मिलने के कारण सभी प्राणी, विशेष रूप से सभी देव गण, ऋषि-मुनि, मानव आदि बड़ी संख्या में जीवन संकट में पड़ गया। देव गण अत्यंत भयभीत हो कर पवन देव से पाताल में मिले व उनसे पृथ्वी लोक पर प्रकट होकर सभी प्राणियों की जीवन-रक्षा के लिए प्रार्थना की।

परंतु पवन देव ने एक शर्त रख दी। उन्होंने कहा कि उनके पुत्र को जीवन दान दिया जाये। उसे वरदान दिया जाए कि उस पर किसी भी अस्त्र-शस्त्र का प्रभाव घातक नहीं होगा तथा उसे 'चिरंजीवी' होने का वरदान भी दिया जाए, तभी वह पुनः प्रकट होंगे।

सभी देवताओं ने अपनी सहमति दे दी। हनुमान की मूर्च्छा समाप्त हुई। वह महाप्रतापी एवं महायोद्धा हो गए।



2

बाली और रावण

“बाली और सुग्रीव सौतेले भाई थे; परन्तु एक दूसरे को सगे भाईयों से भी अधिक प्रेम करते थे।”

बाली अत्यंत बलशाली एवं महा पराक्रमी व्यक्तित्व का स्वामी था। उसे चुनौती देने वाले को उसके कोप (गुस्से) का भाजन बनना पड़ता था। राक्षस रावण को अपने बल पर गर्व था तथा शिवजी के वरदान के कारण वह स्वयं को (तीनों लोकों का) सर्वश्रेष्ठ योद्धा मानता था।

एक दिन रावण के दरबार में अकस्मात् नारद मुनि पधारे। रावण ने उनका हार्दिक स्वागत किया एवं यथायोग्य उनकी सेवा की।

रावण ने मुनि से पूछा, “मुनिवर! कोई विशेष समाचार? आप कहाँ से पधारे हैं? क्या समस्त संसार मेरा सम्मान करता है तथा मेरा लोहा मानता है?” नारद बोले, ‘नारायण! नारायण! केवल एक के अतिरिक्त सभी आपके बल एवं यश का सम्मान करते हैं। विशेष रूप से आपके सुपुत्र के द्वारा देवराज इन्द्र को पराजित करने के बाद आपके यश में और भी वृद्धि हो गई है।’ रावण ने अत्यंत क्रोधित होकर पूछा, ‘ऐसा दुस्साहसी कौन है?’

नारद मुनि बोले, “नारायण! नारायण! वह व्यक्ति वानर-राज बाली है। आप उन्हें पराजित करके त्रिलोक के सर्वश्रेष्ठ योद्धा कहलाने का गौरव प्राप्त करें।”

यह सुनकर रावण ने बाली को चुनौती देने के लिए तुरंत



प्रस्थान किया। रावण ने बाली के राज्य के प्रवेश द्वार पर बाली को युद्ध के लिए ललकारा। पहरेदारों ने उसे जानकारी दी कि 'वानर राज बाली अपनी दैनिक उपासना के लिए बाहर गए हुए हैं। वे सातों समुद्रों की यात्रा करके दोपहर तक लौटेंगे। केवल तभी वे अन्न-जल ग्रहण करेंगे। यदि आपको मरने की जल्दी है, तो आप उनसे समुद्र तट पर जाकर युद्ध कर लें।'

रावण ने बाली को समुद्र तट पर ध्यान मुद्रा में बैठे हुए देखा। नारद ने रावण को सलाह दी कि वह बाली के पीछे जाकर उस पूँछ पकड़ कर उसे पटकें; परंतु जैसे ही रावण ने बाली की पूँछ को स्पर्श किया, बाली ने उसे अपनी पूँछ में कसकर लपेट लिया और रावण को अनेक वर्षों तक इसी स्थिति में ही रहना पड़ा।



3

बाली-सुग्रीव शत्रु के रूप में

एक बार दुंदुभी नाम के दानव ने बाली को युद्ध के लिए चुनौती दी। युद्ध करते समय बाली ने दानव का सिर काट कर आकाश की ओर उछाल दिया। वह सिर 20 योजन (लगभग 360 कि० मी०) की दूरी पर जा गिरा। रक्त के छीटें मार्ग में पड़ने वाले मतंग ऋषि के आश्रम में गिरे। उस समय ऋषि ध्यानावस्था में थे। ध्यान भंग होने पर रक्त की बूंदें देखकर उन्होंने बाली के लिए श्राप दिया कि यदि वह उस आश्रम में प्रवेश करेगा, तो उसके सिर के (हजारों) टुकड़े हो जायेंगे। श्राप के कारण बाली ने कभी उस आश्रम में प्रवेश करने का साहस नहीं किया।

एक अन्य अवसर पर शक्तिशाली मायावी राक्षस ने बाली को ललकारा। बाली के घर के सामने दहाड़ने के पशचात् उसने एक भैंसे का वेश धारण कर लिया और एक गुफा की ओर दौड़ पड़ा। बाली चुनौती सुनकर चुप कैसे रह सकता था? वह भी सुग्रीव को साथ लेकर भैंसे के पीछे-पीछे दौड़ा। जाते-जाते उसने सुग्रीव से कहा, "मैं इस राक्षस से लड़ने गुफा के अंदर जा रहा हूँ। तुम गुफा के बाहर मेरी प्रतीक्षा करना। यदि गुफा से दूध की धारा बहे तो समझ लेना कि राक्षस मारा गया। परंतु यदि रक्त की धारा बहे तो



समझ लेना कि मैं मारा गया। यदि मैं मारा जाऊँ तो गुफा का द्वार पत्थरों से बंद करके स्वयं का राज्याभिषेक करा कर प्रजा की

ठीक प्रकार से देखभाल करना।" ऐसा कहकर बाली ने सुग्रीव को गले लगाया। दोनों भाइयों ने वियोग के आँसू बहाए।

बाली सुग्रीव से बिछुड़ कर गुफा के अंदर तेज़ी से दौड़ा। पूरे एक माह तक गुफा से किसी प्रकार का संकेत नहीं मिला। अंत में बाली ने मायावी का वध कर दिया। परंतु छल (माया) से मायावी ने अपने दूध को रक्त में बदल दिया। रक्त की धारा बाहर की ओर आती देखकर सुग्रीव ने समझ लिया कि उसका भाई बाली मारा गया।

भाई के आदेशानुसार उसने गुफा का द्वार पत्थरों से बंद कर दिया और भारी मन से घर लौट आया। शोक के कारण राज्य में किसी प्रकार का कोई समारोह उत्सव नहीं मनाया गया। एक माह तक बाली के लौटने की झूठी उम्मीद के साथ इंतजार करने के पश्चात् निराश होकर वानरों के प्रमुख लोग एकत्रित होकर सुग्रीव के पास आये और उनसे प्रार्थना कि वे अपना राज्याभिषेक कराकर वानर जाति की रक्षा करें। इच्छा न होते हुए भी सुग्रीव को सभी का आग्रह (प्रार्थना) स्वीकार करना पड़ा और वह राजा बन गया। समय बीतने के साथ-साथ सब कार्य शांतिपूर्वक हो रहे थे; परंतु एक दिन बाली लौट आया।

सुग्रीव को तो अनजाने में अपने भाई के वध का भ्रम हो गया था। बाली को देखकर वह प्रसन्नता पूर्वक उससे गले मिलने के लिए उनकी ओर दौड़ा; परंतु बाली अत्यंत क्रोध के कारण काँप रहा था। उसने सुग्रीव के विचारों (तर्क) को अमान्य कर दिया।

बाली को भ्रम हो गया था कि सुग्रीव मायावी के वध का संकेत पाकर भी भाई को जानबूझकर गुफा के अंदर छोड़कर गुफा का द्वार पत्थरों से बंद करके धोखा देकर घर लौट आया ताकि वह राजा बन सके।

बाली ने सुग्रीव को बहुत पीटा, उसे ठोकर मारकर उसके चार स्वामी भक्त मंत्रियों सहित अपमानित करके अपने राज्य से बाहर निकाल दिया। सुग्रीव, हनुमान एवं अन्य मंत्रियों सहित ऋष्यमूक पर्वत की ओर चले गए; क्योंकि बाली वहाँ प्रवेश नहीं कर सकता था। सुग्रीव को अपनी पत्नी रूमा को साथ ले जाने की अनुमति नहीं मिली। एक जोड़ा कपड़े भी वह साथ नहीं ले जा सका।



4

राम व लक्ष्मण साथ हनुमान की भेंट

एक दिन सुग्रीव व उनके मंत्रीगण पेड़ के नीचे बैठकर भविष्य की योजना बनाने में व्यस्त थे। तभी अचानक आकाश से अद्वितीय गुणवत्ता तथा आकार वाले स्वर्ण आभूषणों की गठरी उनके समीप आ गिरी। उन्होंने आकाश की ओर देखा। उन्होंने देखा, वायुयान में एक राक्षस एक स्त्री का अपहरण करके ले जा रहा है। उन्होंने उस गठरी को सावधानी पूर्वक सुरक्षित स्थान पर रख लिया।

सुग्रीव अपनी पत्नी, राज्य एवं प्रजा को खो चुका था। अतः वह भय के कारण सदा दुःखी व सावधान रहता था। एक दिन अचानक उसने दो सुंदरतम नवयुवकों को अपनी ओर आते हुए देखा। दोनों संन्यासियों वाले वल्कल वस्त्र धारण किये हुए थे; परंतु उनके कंधों पर धनुष-बाण थे। सुग्रीव कुछ चिंतित हुए; क्योंकि उन्हें ऐसा लगा कि बाली ने उनकी हत्या करने के लिए उन दो युवकों को भेजा होगा।

दोनों अत्यंत बलशाली योद्धा लग रहे थे तथा उनके व्यक्तित्व से ऐसा लग रहा था कि उन्होंने असंभव कार्यों को संभव करने के लिए ही जन्म लिया हो।



सुग्रीव ने हनुमान को बुलवाया और कहा कि वे ब्राह्मण के वेश में दोनों नवयुवकों से मिलकर उनके आगमन का राज (भेद)

मालूम करें। अतः हनुमान ने दोनों से मिलकर उनका स्वागत किया तथा उनके आने के उद्देश्य के बारे में जानकारी प्राप्त की।

श्री राम ने हनुमान की ओर इंगित (संकेत) करके लक्ष्मण से कहा, “लक्ष्मण! इस ब्राह्मण ब्रह्मचारी की भाषा से लगता है कि इन की भाषा व्याकरण के अनुसार अत्यंत शुद्ध एवं परिपक्व है। इन्होंने भाषा पर पूर्ण प्रभुत्व (अधिकार) पा लिया है।”

तब श्रीराम ने हनुमान को अपना पूर्ण परिचय कराया एवं अपनी व्यथा कथा सुनाई। हनुमान ने भी सुग्रीव की दुखभरी कथा का वर्णन किया। उन्होंने अपना मत व्यक्त किया कि यदि वे दोनों सुग्रीव के साथ मित्रता एवं समझौता कर लें तो दोनों पक्षों के लिए हितकारी (लाभदायक) होगा। श्री राम बाली का वध करके उनका खोया हुआ राज्य वापस दिलाने में सुग्रीव की सहायता करें तथा सुग्रीव श्रीराम की सहायता उनकी पत्नी सीता को खोजकर उनसे मिलाने के रूप में करें।

इस प्रकार श्रीराम एवं सुग्रीव दोनों मित्र बन गए। दोनों ने शपथ ली कि वे एक दूसरे की सहायता करेंगे।

यद्यपि सुग्रीव ने श्रीराम से समझौता कर लिया था; परंतु उन्हें भरोसा नहीं था कि श्रीराम बाली का वध कर सकेंगे। उन्हें हर पल भय सताता रहता था। हनुमान ने उनके डर के भाव को पहचान कर श्रीराम से निवेदन किया कि वे सुग्रीव को अपनी शक्ति का बोध कराएँ। तब श्रीराम ने अपने बायें पैर के पंजे से दुंदुभि के भारी-भरकम सिर को उछाल दिया। वह सिर सैकड़ों कोस दूर जा

गिरा। श्री राम ने एक बाण से उन सात पेड़ों को एक साथ गिरा दिया जो एक वृत्तीय (गोल) घेरे में स्थित थे।

श्री राम की शक्ति देखकर सुग्रीव प्रसन्न एवं आश्चर्य (संतुष्ट) हुए। उन्होंने बाली को युद्ध के लिए ललकारा। इस युद्ध में सुग्रीव हारता हुआ दिखाई दिया। तब श्रीराम ने एक पेड़ के पीछे छिपकर बाली पर घातक बाण से प्रहार किया बाली का वध हो गया।

वर्षा ऋतु में श्रीराम एवं लक्ष्मण वन में निवास कर रहे थे। सुग्रीव व उनकी सेना आदि मानसून की समाप्ति की प्रतीक्षा में अपने-अपने निवास स्थानों में वास कर रहे थे।

मानसून समाप्त हो गया परंतु; सुग्रीव को अपने वचन के अनुसार कार्य योजना बनाने का विचार नहीं आया। वे घर पर ही आनन्द मग्न रहे।

5

सीता की खोज आरंभ

श्री राम ने लक्ष्मण को सुग्रीव के पास भेजा। लक्ष्मण ने सुग्रीव को संदेश दिया कि श्रीराम के पास वैसे अनेक बाण शेष हैं; जिनमें से एक ने बाली का वध कर दिया था। हनुमान ने परिस्थिति को भांप कर सुग्रीव को सावधान कर दिया था। अतः सीता की खोज का कार्य युद्ध स्तर पर आरंभ कर दिया गया। सभी स्थानों से वानरों को बुलवा लिया गया। सभी के आ जाने पर सुग्रीव ने उन्हें आदेश दिया, 'आप सभी अलग-अलग दिशाओं में जाकर माता सीता की खोज करो और एक माह में सफल होकर लौट आओ। एक माह के बाद जो माता सीता के बारे में जानकारी के बिना लौटेंगे, उन्हें मृत्यु-दंड दिया जाएगा।' उन्हें वह दृश्य याद आया जिसमें उन्होंने एक वायुयान को दक्षिण दिशा की ओर जाते हुए देखा था। अतः उन्होंने उस दिशा में हनुमान, जामवंत, अंगद, नल, नील तथा केसरी आदि के नेतृत्व में वानरों का एक दल विशेष रूप से भेजा।

उस दल में से श्रीराम ने हनुमान को अलग बुलाकर उन्हें अपनी अंगूठी साँपी जिसके माध्यम से वे माता सीता से परिचय कर सकेंगे।

इधर-उधर दूँढ़ते हुए वे सब समुद्र तट पर पहुँच गए। समुद्र 100 योजन चौड़ा था। उन्हें ठीक जानकारी नहीं थी कि माता सीता कहाँ होंगी। उस दुविधा की स्थिति में बाली के बलशाली योद्धा सुपुत्र अंगद ने संशय व्यक्त किया, “यदि हम बिना माता सीता की जानकारी प्राप्त किये वापिस लौटे तो सुग्रीव हम सभी को मृत्यु दंड देंगे। बाली का सुपुत्र होने के कारण सुग्रीव को मुझसे विशेष घृणा है, केवल श्रीराम के आदेश के कारण ही उन्होंने अपना उत्तराधिकारी घोषित किया है। मैं यहीं पर अन्न-जल त्याग कर अपने प्राण त्याग दूँगा।”

अंगद की निराशा से भरी वाणी सुनकर अन्य सभी ने भी घोषणा की कि वे भी अंगद के साथ अपने प्राण त्याग देंगे।

गिद्धराज संपाती अपने दोनों घायल पंखों के कारण पृथ्वी पर असहाय (लाचार) सा लेटा हुआ था। वानरों की बातें सुनकर उत्साहपूर्वक बोलने लगा, “अहो भाग्य! परमात्मा सचमुच बड़ा दयालु है। मुझे असहाय पाकर मेरे भोजन के लिए कितने वानर भेज दिये हैं! जैसे-जैसे मरते रहेंगे, मैं उन्हें एक-एक करके खाता रहूँगा।”

गिद्ध की ऐसी वाणी सुनकर सभी वानर घबराकर एकदम सामूहिक रूप से चिल्लाये “ओह! यह गिद्ध सचमुच हम सब को खा लेगा। हम श्रीराम के लिए बेकार हो गए। जटायु कितना भाग्यशाली था! उसने श्रीराम के लिए प्राण ही नहीं गंवाए, बल्कि उनकी गोद में अंतिम श्वास लेकर मोक्ष को प्राप्त हो गया।”

वानरों की वाणी सुनकर संपाती ऊँचे स्वर में बोला, “किसने



अपने मुख से मेरे प्यारे भाई जटायु का नाम पुकारा है? जो भी हो, निर्भय होकर वह मेरे समीप आए।”

वानरों ने उसके समीप जाकर रावण के साथ जटायु के युद्ध तथा बलिदान की कथा का वर्णन किया।

जटायु के बलिदान के बारे में सुनकर संपाती बोला, “आपमें

से कोई मुझे समुद्रतट पर ले जाये तथा मुझे अपने शहीद भाई का तर्पण कराने में मेरी सहायता करे। तब मैं भी आपकी सहायता करूँगा जिससे आप माता सीता को खोज पाएँगे।”

समुद्र तट पर तर्पण की प्रक्रिया पूर्ण करने के पश्चात् संपाती ने अपने बारे में बताया, “मेरे भाई जटायु ने तथा मैंने स्वयं जवानी के जोश में स्पर्धा की भावना से आकाश में ऊँची उड़ान भरी। जब हम सूर्य की कक्षा के निकट पहुँचने लगे, मैंने अपने भाई को नीचे की ओर धकेल दिया ताकि उसके पंख न जलें। वह तो बच गया; परंतु मेरे दोनों पंख जल गए और मैं पृथ्वी पर गिरकर मूर्छित हो गया। अनेक वर्षों के पश्चात् मुझे होश आया। मेरे एक परिचित महात्मा ने मेरी दयनीय दशा का कारण पूछा। मैंने अपनी व्यथा-कथा का वर्णन किया।” थोड़ी देर शांत रहकर वह पुनः इस प्रकार बोला —

“तब महात्मा जी ने मुझे बताया कि कुछ वानर माता सीता की खोज में मेरे निकट आएँगे। यदि मैं उनकी सहायता करूँगा तो मेरे नए पंख आ जाएँगे। इस समय माता सीता रावण की कैद में हैं। वहाँ माता सीता अन्न-जल त्याग कर केवल ‘राम’ नाम का जाप करती रहती हैं। मेरी आँखें उनका मुरझाया चेहरा तथा आँखें देख पा रही हैं। आप में से कोई एक वानर समुद्र पार करके उनसे भेंट और वार्तालाप कर सकेंगे। आह! अद्भुत! देखिए मेरे नए पंख आ गए हैं।”

तब उत्साहित होकर पक्षी उड़ गया।



6

हनुमान की जामवंत से भेंट

वानर समूह में संपाती के शब्दों ने नया उत्साह भर दिया। उनमें से एक ने कहा कि वह दस योजन तक छलांग लगा सकता है। दूसरे ने बीस योजन तथा तीसरे ने नब्बे योजन की क्षमता बताई। दल के नेता अंगद ने कहा कि वह एक छलांग में सारा समुद्र पार कर लेगा परंतु वापस आ पाएगा, उसे पूरा भरोसा नहीं था।

अंगद की बात सुनकर सभी वानर एक साथ बोले, “राजकुमार! हम आपको नहीं जाने देंगे। हम में से ही कोई इस कार्य को पूर्ण करेगा।”

तब सबसे वयोवृद्ध जामवंत बोला, “अपनी जवानी के दिनों में मैंने एक ही बार में पूरे ब्रह्मांड की इक्कीस परिक्रमाएँ की थीं। अब मैं बहुत वृद्ध हो चुका हूँ।”

कुछ देर रुककर उसने चारों ओर देखा। उसने हनुमान को सबसे अलग दूर बैठे हुए देखा। वह वार्तालाप में भाग नहीं ले रहा था।

जामवंत धीरे से हनुमान के पास पहुँचा तथा बोला, “हे आंजनेय! बोल क्यों नहीं रहे? सबसे अलग दूर क्यों बैठे हैं?”

क्या श्रीराम ने आपके हाथ में अंगूठी नहीं सौंपी थी? जो माता सीता को दिखाने के लिए थी। श्रीराम का आप पर पूर्ण विश्वास रहा होगा कि केवल आप ही उनके कार्य को पूर्ण कर सकोगे। आपको अपनी क्षमताओं के बारे में ज्ञान है न?"

उपरोक्त प्रश्नों के माध्यम से जामवंत ने हनुमान को अपनी क्षमताओं का स्मरण कराना आरंभ किया। बचपन की उनकी सूर्य की ओर लगाई गई छलांग व उसके परिणाम आदि घटनाओं का स्मरण कराया।

यह सब सुनकर हनुमान ने स्वयं को धीरे-धीरे बढ़ाना आरंभ किया। शरीर को पूरा बढ़ाकर जोर से गर्जन किया जिसकी आवाज़ सारे ब्रह्मांड में गूंज गई। 'जय श्री राम' के घोष के साथ वह एक ही छलांग में समुद्र पार कर गए।

जब हनुमान आकाश में उड़ रहे थे तब सिंहिका नाम की राक्षसी, जो किसी की परछाईं पकड़ कर उसे रोक सकती थी, ने उन्हें मार्ग में रोक लिया। हनुमान ने अपने बायें पैर की ठोकरी से उसका वध कर दिया।

हनुमान की परेशानियाँ यहीं समाप्त नहीं हुईं। सर्पों की माता सुरसा को देवताओं ने हनुमान की परीक्षा लेने के लिए भेजा। सुरसा ने हनुमान को युद्ध के लिए ललकारा। हनुमान ने उससे प्रार्थना कि वह उनका मार्ग छोड़ दे; परंतु वह न मानी। वह बोली, "मैं यहाँ से गुजरने वालों से युद्ध करके, उन्हें मार कर खा लेती हूँ। यह देवताओं का आदेश है। अतः आओ, मुझसे युद्ध करो और



जल्दी से मेरे मुख में प्रवेश करो।"

हनुमान ने कहा, "मैं श्रीराम के कार्य के लिए जा रहा हूँ। उस कार्य को पूर्ण करके मैं शीघ्र ही लौटूँगा, तब मैं तुम्हारे मुख में प्रवेश करूँगा।"

सुरसा ने कहा कि वह हनुमान को जाने की अनुमति नहीं देगी। हनुमान को तुरंत उसके मुख में प्रवेश करना पड़ेगा। हनुमान ने कहा, "यदि यही एकमात्र मार्ग है, तो तुम अपना मुख खोलो।"

सुरसा ने एक योजन चौड़ा अपना मुख खोला। हनुमान ने अपने शरीर को दो योजन तक बढ़ा दिया। सुरसा ने पाँच योजन चौड़ा मुँह खोला तो हनुमान ने अपना शरीर दस योजन तक फैला लिया। तब सुरसा ने बीस योजन तक मुँह खोला और अब हनुमान अपने शरीर को एक दम छोटे प्राणी के रूप में बदल कर उसके मुख में प्रवेश करके उसके कान से बाहर निकल आये।

बाहर आकर हनुमान ने कहा, “ए सर्पों की माता! आपको नमन।”

सुरसा ने उसे श्रीराम जी के कार्य के लिए शुभकामनाएँ दीं और प्रस्थान कर गई।

इन दो बाधाओं को पार करके हनुमान ने सुख की सांस ली। उसी समय समुद्र के तल से मैनाक नामक पर्वत उभर कर ऊपर आया और हनुमान को विश्राम करने की प्रार्थना की, “आप थक गए होंगे। कृपया मुझ पर थोड़ी देर विश्राम करके आगे बढ़ें।” हनुमान ने धन्यवाद करते हुए विनम्रता पूर्वक पर्वत की प्रार्थना अस्वीकार करते हुए कहा कि वह कार्य पूर्ण हो जाने के पश्चात् ही विश्राम करेंगे; क्योंकि श्रीराम बड़ी व्याकुलता से उनकी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। तब पर्वत की सद्भावना के लिए धन्यवाद के प्रतीक के रूप में उन्होंने पर्वत को स्पर्श किया।

मैनाक पर्वत हिमवान पर्वत का पुत्र था। हिमवान पार्वती के बड़े भाई थे। प्राचीन काल में पर्वतों के पंख हुआ करते थे। जब इन पंखों की सहायता से वे दूर-दूर तक तेज गति से उड़ते थे, ऐसे

में देवों तथा सप्तर्षियों के लिए यानों द्वारा यात्रा करना कठिन होता था। अतः देवताओं ने इंद्र से शिकायत की। इंद्र ने पर्वतों के पंख अपने वज्र से काट दिये। मैनाक ने वरुण देव, जो समुद्रों के स्वामी हैं, से शांति संधि कर ली तथा समुद्र में प्रवेश कर लिया।



हनुमान का लंका में प्रवेश

संध्या के समय जब अंधेरा छा रहा था, हनुमान लंका के किनारे पर पहुँच गए। उन्होंने किले की आश्चर्य जनक सुंदरता एवं अद्भुत दीप्ति के दर्शन किये। वे लंका के उत्तरी द्वार लंका में प्रवेश करना चाहते थे जिसकी रक्षा व्यवस्था 'लंका-लक्ष्मी' के हाथों में थी। हनुमान ने छोटे से प्राणी के रूप में द्वार में प्रवेश करना चाहा; परंतु 'लंका-लक्ष्मी' ने उन्हें देख लिया और उन्हें रोकने का प्रयत्न किया। हनुमान ने उस पर घातक प्रहार कर उसे गिरा दिया। कुछ देर बाद वह खड़ी हुई और हनुमान को अपनी कथा सुनाई। उसने बताया कि वह देवताओं के आदेश से स्वर्ग लोक से लंका में आई थी। देवों ने कहा था कि जब हनुमान वहाँ पधारेँगे और उस पर घातक प्रहार करेंगे, तब वह स्वर्गलोक में अपनी पूर्व स्थिति में आ जायेगी। हनुमान को अनेक प्रकार से शुभकामनाएँ एवं शुभाशीष देकर वह स्वर्ग लोक लौट गई।

हनुमान को माता सीता का ठिकाना मालूम न होने एवं उन्हें ढूँढने की उत्सुकता में वे चारों तरफ शीघ्रता से उड़ते रहे। उन्होंने लंका की स्थापत्य कला की भव्यता एवं सुंदरता के दर्शन किये।

वे रावण के तथा विभीषण के महलों में घूमते रहे, परंतु माता सीता के कहीं दर्शन नहीं हुए।



रावण के महल में एक अति अकल्पनीय सुन्दर नारी को देखा। उसे सीता माता समझ कर व रावण के महल में देखकर हनुमान को अत्यंत पीड़ा हुई। उसी समय उनके पिता 'पवन देव' प्रकट हुए और उन्होंने हनुमान को बताया कि माता सीता 'अशोक वाटिका' में बन्दी हैं।

वे तुरंत अशोक वाटिका की ओर उड़ कर पहुँचे। उस वाटिका के रख-रखाव एवं सुरक्षा व्यवस्था से उस वाटिका के प्रति रावण के लगाव का पता चलता था। वहाँ उन्होंने माता सीता को देखा। वे अपना सिर झुकाए हुए अनेक भयानक राक्षसियों से घिरी हुई थीं जिनके कपड़ों से बदबू आ रही थी। वे केवल 'राम' नाम का ही उच्चारण कर रही थीं।

हनुमान स्वयं को एक छोटे से प्राणी के रूप में बदल कर उस पेड़ पर बैठ गए जिसके नीचे माता सीता बैठी थीं। वहाँ बैठकर वे माता सीता के सामने उपस्थित होने के लिए अवसर की प्रतीक्षा करने लगे।

तभी उन्होंने शंखों तथा डंको के बजने की धुन सुनी। उन्होंने माता सीता की ओर मशालों का जलूस आते हुए देखा। वह रावण और उसके सैनिकों का जलूस था। रावण ने सर्वोत्तम शाही वस्त्र धारण किये हुए थे। वह माता सीता को प्रभावित करके उनका मन जीतने के लिए आया था। रावण माता सीता के पास आकर रुका। अनेक प्रभावी मुद्राओं के साथ उसने माता सीता को संबोधित किया।

“ए अद्वितीय सुंदरी! उदास होने व उपवास रखने का क्या लाभ होगा? तुम्हें तुम्हारे पति ने त्याग दिया है। यदि उन्हें तुम्हारे साथ थोड़ी सी भी सहानुभूति होती तो वह यहाँ आकर तुम्हें मुझसे जीत लेते। वह यह अच्छी तरह से जानता है कि वह यहाँ नहीं आ सकता अतः तुम्हें मुझसे छुड़ा नहीं सकता। तुम महिलाओं में शिरोमणि हो। मेरे साथ विवाह करके तुम मेरी पटरानी के रूप में सर्वोत्तम भोग-पदार्थों के साथ अपना जीवन परमानन्दपूर्वक व्यतीत कर सकोगी। स्वर्ग की अप्सराएँ भी मेरी रानियाँ बनने को (तरसती हैं) लालायित रहती हैं। नौद से जागो, ज़िद्द त्यागो और मेरी पटरानी बनना स्वीकार कर लो।”

जब रावण ने अपना प्रणय निवेदन (विवाह का प्रस्ताव) पूर्ण कर लिया, माता सीता ने रावण की ओर देखे बिना एक घास के तिनके को (घूँघट) परदे के रूप में रावण और अपने बीच में पकड़ कर कहा, “ए रावण! मेरे सम्मुख तुम इस तिनके के समान हो। मेरे पतिदेव अवश्य आयेंगे।”

रावण अत्यंत क्रुद्ध हुआ उसने अपनी खड्ग निकाली और माता सीता को मारने के लिए आगे बढ़ा। परंतु उसकी महारानी मंदोदरी तेज़ी से बीच में आई और माता सीता को बचा लिया।

मंदोदरी ने रावण से कहा, “महाराज! एक लाचार महिला, जिसका आपने छलपूर्वक अपहरण कर लिया और उसे अपनी कैद में रखा हुआ है, की हत्या करना आपको शोभा देता है क्या? आप स्वयं तथा संपूर्ण विश्व आपको महा प्रतापी मानता है। एक

दुखी, असहाय महिला की हत्या करने में कौन-सी शूर-वीरता है? यदि आप वास्तव में शूर-वीर हैं तो उसके पति राम को युद्ध में मार कर उसे पा लीजिए। यदि आपने ऐसा जघन्य कार्य किया तो सारा विश्व आपकी निंदा करेगा।"

मन्दोदरी की उचित सलाह सुन कर रावण कुछ शांत हुआ तथा उसने वहाँ उपस्थित सीता की प्रहरियों को कहा, "तुम सब मिलकर दो माह के अंदर ही जैसे भी हो सीता को मेरी इच्छा समझा कर उसे समर्पण के लिए तैयार कर दो। यदि वह ज़िद्द पर अड़ी रही, तो उसे मेरी 'चन्द्रहास' (खड्ग) का शिकार बनना होगा।" ऐसा आदेश देकर रावण ने प्रस्थान किया।



8

हनुमान की सीता से भेंट

हनुमान बड़ी जिज्ञासा (उत्सुकता) पूर्वक प्रत्येक गतिविधि को देख रहे थे।

माता सीता ने अत्यंत निराश एवं दुखी होकर आत्म-हत्या करने का विचार किया। ऐसी विकट परिस्थिति में माता सीता ने अकस्मात् श्रीराम की प्रशंसा में श्रीराम कथा की मधुर वाणी सुनी परंतु उन्हें अपने आस-पास कोई नजर नहीं आया। श्रीराम कथा इस प्रकार सुनाई जा रही थी—

“दशरथ” (नेमी) अयोध्या के विख्यात राजा थे। उनकी तीन रानियाँ थीं, कौशल्या, सुमित्रा एवं कैकेयी। वृद्धावस्था तक नेमी की कोई संतान नहीं हुई। अपने धर्म गुरुओं की सलाह से उन्होंने ‘पुत्रकामेष्टि यज्ञ’ का आयोजन करवाया। यज्ञ की ज्वाला से ‘अग्नि देव’ प्रकट हुए तथा उन्होंने राजा दशरथ को खीर से भरा एक दिव्य पात्र भेंट करके कहा कि इस दिव्य खीर को खाकर रानियों को अवश्य ही संतान प्राप्ति होगी। भेंट देकर अग्नि देव अदृश्य हो गये।

कौशल्या ने राम को जन्म दिया तथा कैकेयी ने भरत को।

सुमित्रा ने दो जुड़वां पुत्रों, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न को जन्म दिया। चारों राजकुमारों का कुलगुरु वशिष्ठ की देखरेख में लालन-पालन हुआ। चारों ने सभी कलाओं, ज्ञान-विज्ञान एवं अस्त्र-शस्त्रों की युद्ध कला में निपुणता प्राप्त कर ली।"

थोड़ी देर के लिए आवाज़ बंद हो गई। फिर ध्यानाकर्षित करते हुए पुनः कथा आरंभ हुई, "एक दिन ऋषि विश्वामित्र राजमहल में पधारे। राजा दशरथ ने उनका यथा-योग्य स्वागत-सत्कार किया तथा उनके अकस्मात् एवं अनपेक्षित आगमन के बारे में पूछा और निवेदन किया कि यदि उन्हें धन-सम्पत्ति, भूमि अथवा अन्य किसी वस्तु की आवश्यकता हो तो सादर एवं सहर्ष पूर्ण की जाएगी।

परंतु ब्रह्मर्षि विश्वामित्र की आवश्यकता तो एक दम भिन्न थी। वे अपने पूर्वजों के तर्पण के लिए प्रत्येक पूर्णिमा के अवसर पर यज्ञ का आयोजन किया करते थे। परंतु कुछ राक्षस उसमें अपवित्र वस्तुएँ मदिरा, मांस और हड्डियाँ डाल कर यज्ञ में विघ्न पहुँचाते थे। अतः वे यज्ञ की सुरक्षा के लिए श्री राम को लेने आये थे।

उनकी यह विचित्र माँग सुनकर राजा दशरथ दंग एवं सन्न रह गए।

उन्होंने महर्षि से निवेदन किया कि "राम तो अभी बालक है जिसने अभी तक किसी से युद्ध नहीं किया। अतः वह अकेला प्रथम युद्ध भयानक राक्षसों के साथ किस प्रकार कर सकेगा? मैं इसके लिए अनुमति नहीं दे सकता।" उन्होंने पुनः निवेदन किया, "मैं स्वयं एक महान योद्धा हूँ। मैंने तो असुरों से युद्ध में अनेक बार देवों की

सहायता की है। उन्हें विजयश्री भी दिलाई है। यद्यपि अब मैं वृद्ध हो चुका हूँ, परंतु इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यदि आपका आदेश हो तो मैं आपके सारे शत्रुओं का विनाश कर दूँगा।"

विश्वामित्र एक दम क्रोध प्रकट करने लगे। वे तुरंत उत्तेजित होकर प्रस्थान करने के लिए खड़े हो गए।

उसी समय राजगुरु वशिष्ठ ने स्थिति को संभाला। उन्होंने महर्षि को शांत किया तथा राजा को समझाया कि वे राम और लक्ष्मण को महर्षि विश्वामित्र को सौंप कर निश्चित हो जायें। (लक्ष्मण सदा बड़े भाई श्रीराम के साथ ही रहते थे) क्योंकि महर्षि स्वयं समर्थ हैं; उन्होंने अपने लिए अलग स्वर्ग की रचना की थी जिसका नाम था 'त्रिशंकु स्वर्ग' दोनों भाई उनके मार्गदर्शन में भली प्रकार से कुशल योद्धा बन सकेंगे।"

न चाहते हुए भी दशरथ को स्वीकृति देनी पड़ी।

मुनि विश्वामित्र ने दोनों भाइयों के मन में राज्य-प्रशासन, अर्थ-प्रबंधन, न्याय-व्यवस्था आदि विषयों के बारे में लघु बोध कथाओं के माध्यम से जिज्ञासा जगा दी। उन्हें आण्विक अस्त्र चलाने व उन्हें लौटाने की कला भी सिखाई। 'बल' तथा 'अतिबल' नामक दो दिव्य शक्तियाँ भी उन्हें प्रदान कीं। इन दिव्य शक्तियों के कारण आपात् स्थिति में 'भूख मिटाने' तथा 'प्यास बुझाने' की शक्ति प्राप्त होगी। (क्योंकि वे जान चुके थे कि भविष्य में दोनों को चौदह वर्ष की लम्बी कालावधि तक वनों में रहना पड़ेगा।)

चलते-चलते वे 'ताड़कावन' में पहुँच गए। ऋषि ने श्रीराम को

सावधान किया कि “ताड़का राक्षसी सबसे अधिक भयानक राक्षसी है। इसके भय से इस वन में से कोई नहीं आता-जाता।” यह सुनकर श्री राम ने अपने धनुष से ‘टंकार’ की जिसे सुनकर राक्षसी श्रीराम की तरफ लपकी व उनपर आक्रमण कर दिया। ऋषि के आदेशानुसार श्री राम ने एक बाण से उसका वध कर दिया।

जैसे पूर्णिमा काल निकट आया, श्रीराम ने ऋषि को प्रणाम करके निवेदन किया कि वे यज्ञ की तैयारी निश्चित होकर करें। वह स्वयं यज्ञ की रक्षा के लिए तत्पर हो गए। अतः यज्ञ के लिए सुप्रबंध करके यज्ञ आरंभ किया गया। इस बीच राक्षस मारीच तथा उसका भाई सुबाहु अपनी सेना के साथ यज्ञ में बाधा पहुँचाने के लिए आ धमके तथा उन्होंने यज्ञ को अपवित्र करने का प्रयत्न किया। श्रीराम ने एक बाण से सुबाहु का वध कर दिया तथा दूसरा बाण मारीच की ओर चलाया। मारीच बाण के भय से इधर-उधर भागता फिरा। बाण उसका पीछा करता रहा। अंत में मारीच श्रीराम की शरण में आकर क्षमा याचना करने लगा। उसी दिन से वह ‘राम का परम भक्त’ बन गया।

विश्वामित्र के आश्रम पर तीन दिन तक शासकीय अतिथि के रूप में निवास के पश्चात् मुनि विश्वामित्र ने उन्हें मिथिला चलने के लिए कहा। मिथिला सुविख्यात राजा जनक की राजधानी थी। मिथिला के मार्ग में वे मुनि गौतम के आश्रम में पधारे। आश्रम निर्जन एवं सूना था। मुनि ने उन्हें गौतम मुनि व उनकी पत्नी अहिल्या की दर्द भरी कथा सुनाई जिसमें अहिल्या पति के श्राप के कारण मूर्तिवत् हो गई थी। श्रीराम ने मूर्तिवत् ध्यानस्थ अहिल्या

को अपने दाएँ पैर के स्पर्श से ‘श्रापमुक्त’ किया।

मुनि के मार्गदर्शन में दोनों भाई मिथिला पहुँचे। राजा जनक अति विशिष्ट अतिथियों के आगमन से अति प्रसन्न हुए।

इतनी कथा सुनाने के पश्चात् हनुमान पुनः थोड़ी देर के लिए चुप हो गए।

माता सीता ने चारों तरफ और अधिक सुनने की ललक के साथ देखा। वे अब अपने सभी कष्ट एवं चिंताएँ भूल चुकी थीं।

तभी कहानी एकदम आगे बढ़ी।

दो ओजस्वी राजकुमारों, जिनके व्यक्तित्व से असंभव कार्यों को संभव बनाने का संकल्प प्रकट हो रहा था, को देखकर राजा जनक के मन में आशा की नई किरणें चमकीं।

उन्होंने मुनि को दोनों के जन्म, वंश एवं परिवार के बारे में बताने की प्रार्थना की। मुनि ने दोनों राजकुमारों का परिचय कराया और राजा जनक से ‘त्र्यंबक धनुष’ मंगवाने के लिए कहा। यह धनुष शिवजी ने ‘त्रिपुर राक्षसों’ के वध के पश्चात् राजा जनक के पास रखवा दिया था।

श्रीराम ने धनुष को तोड़कर सीता से विवाह किया।

श्रीराम जब अयोध्या लौट रहे थे, परशुराम ने श्रीराम को रोका व अपना क्रोध प्रकट किया। अंत में परशुराम पराजित होकर चले गए।

राजा दशरथ ने कुल गुरु, मंत्रीपरिषद् एवं अन्य ऋषि-मुनियों के परामर्श के पश्चात् श्रीराम को युवराज घोषित करने का निर्णय

किया। इस निमित्त समारोह की उत्तम ढंग से सभी व्यवस्थाएँ भी कर ली गई। कैकेयी को अपनी 'दाई-माँ' मंथरा से यह जानकारी मिली। मंथरा ने उसे इस समारोह को रुकवा देने के लिए तैयार कर लिया। कैकेयी ने राजा दशरथ से कहा कि भरत को युवराज बना कर उसे अयोध्या का राज्य सौंपा जाये तथा श्रीराम को चौदह वर्षों के वन-वास का आदेश दिया जाये।

पिता के वचन के सम्मान तथा उनके स्वाभिमान की सुरक्षा के लिए श्रीराम वन-गमन के लिए सहर्ष तैयार हो गए। परंतु श्रीराम के जाने के पश्चात् राजा दशरथ उनके वियोग को सहन नहीं कर पाये व स्वर्ग सिधार गए। भरत अपने ननिहाल से लौट आये और दोनों दुर्घटनाओं के बारे में जानकर अत्यंत क्रोधित हुए। उन्होंने अपनी माता को 'अपने पति का हत्यारा' कहकर पुकारा तथा स्वयं को उनका पुत्र होने के लिए लज्जित होने की कटु बात भी कही। अपने मृत पिता से संबंधित आवश्यक अंतिम क्रियाओं के पश्चात् श्रीराम को वन से लौटा लाने के उद्देश्य से वह वन के लिए प्रस्थान कर गए।

श्रीराम के मित्र 'गुह' ने श्रीराम, लक्ष्मण एवं माता सीता को अपनी नाव से गंगा नदी के दूसरी ओर पहुँचाया था। भरत, शत्रुघ्न तथा उनके साथ आए सभी को भी 'गुह' ने नदी पार करा दी। वे सभी श्रीराम के पास पहुँचे तथा उन्होंने उनसे अयोध्या लौटकर राज्य संभालने की प्रार्थना की। श्रीराम ने सभी को अपने-अपने कर्तव्य का स्मरण कराया तथा पिताजी के वचन का सम्मान करने के लिए कहा। भरत न चाहते हुए भी अयोध्या वापस लौट गए

परंतु उन्होंने श्रीराम से कहा कि उनकी 'चरण-पादुकाएँ' ही सिंहासन पर विराजमान रहेंगी तथा वह स्वयं श्रीराम के सेवक के रूप में प्रजा व राज्य की देखभाल करेंगे। श्रीराम के सम्मुख उन्होंने एक कठोर शर्त भी रख दी—

“यदि आप चौदह वर्ष का समय पूर्ण होने पर तुरंत अयोध्या नहीं लौटते तो मैं अग्नि में प्रवेश कर आत्म-दाह कर लूँगा।”

श्रीराम ने इस शर्त को स्वीकार कर लिया और भारी मन से भरत अयोध्या लौट गए।

श्रीराम, माता सीता एवं लक्ष्मण ने वनवास का जीवन सहर्ष बिताया।

एक दिन रावण माता सीता की सुंदरता से मोहित होकर वन में आया। उसने छल से श्रीराम एवं लक्ष्मण को माता सीता से दूर जाने के लिए विवश कर दिया तथा माता सीता का अपहरण कर लिया। श्रीराम एवं लक्ष्मण सीता की खोज में 'किष्किंधा' वन में पहुँचे। वहाँ श्रीराम व सुग्रीव में परस्पर सहायता के लिए समझौता हुआ। श्रीराम ने सुग्रीव के बड़े भाई बाली का वध करके सुग्रीव को राजा बनाया।

समझौते के अनुसार सुग्रीव ने अपने वानर सैनिकों को माता सीता की खोज के लिए चारों तरफ भिजवाया। मैं हनुमान सुग्रीव के मंत्रियों में से एक मंत्री, महा समुद्र को पार करके यहाँ पहुँच कर आपके दर्शन कर रहा हूँ। मैं समझता हूँ मेरा जीवन धन्य हो गया।

माता सीता को सुख पहुँचाने वाली यह कथा सुनाकर हनुमान रुके।

माता सीता ने अनुमान लगाया कि संभवतः यह राक्षस रावण की उन्हें प्रभावित करने वाली एक चाल है। फिर विचार आया कि यह सुखद स्वप्न है। परंतु फिर सोचा कि स्वप्न तो हो ही नहीं सकता क्योंकि वह पलकें नहीं झपकतीं। वे बोलीं, "यदि कोई भद्र पुरुष मुझे कथा सुना रहे थे, तो कृपया तुरंत मेरे सम्मुख उपस्थित हों।"

तभी हनुमान, जिन्होंने इतना सूक्ष्म रूप धारण कर रखा था कि वे राक्षसियों को दिखाई नहीं दे रहे थे, ने माता सीता को सादर प्रणाम किया। उन्होंने अपना नाम हनुमान बताया तथा श्रीराम की दी हुई अंगूठी उन्हें दिखाई।

अंगूठी देखकर माता सीता फूटफूट कर रोने लगीं। फिर उन्होंने हनुमान से पूछा, 'क्या आप भी मेरी तरह से श्रीराम से बिछुड़े हुए हैं?'

तब उन्होंने हनुमान से पूछा कि श्रीराम की वानरों से मित्रता किस प्रकार हुई? इस प्रश्न के उत्तर में हनुमान ने श्रीराम-लक्ष्मण से अपनी भेंट से लेकर आगे की सभी कथा विस्तार से सुनाई।

फिर हनुमान ने कहा, "माता श्री! अब आप और अधिक चिंतित न हों। मैं आपको अपने कंधों पर बिठाकर एक ही छलांग में श्रीराम के पास पहुँचा दूँगा।"

'परंतु तुम तो बहुत सूक्ष्म जीव हो? माता सीता ने आश्चर्य पूर्वक कहा।

यह सुनकर हनुमान ने अपना अति विराट स्वरूप दिखाकर उन्हें अति प्रसन्न कर दिया और कहा, 'मेरे जैसे इक्कीस हजार (21,000) योद्धा श्रीराम के पास हैं।'

माता ने कहा, 'पुत्र हनुमान! मैंने तुम्हारी वीरता और शक्ति पहचान ली है। तुमने जितना कहा, उससे अधिक करने की क्षमता तुममें है। परंतु तुम अब श्रीराम के पास लौट कर उन्हें मेरी ओर से प्रार्थना करो कि वे स्वयं समुद्र पार करके रावण का वध करें तथा मुझे ले जायें। अब तुम चलो। परमात्मा तुम्हें शीघ्र सफलता दिलाएँ।"

इस प्रकार माता सीता ने अंजनेय को अपना शुभाशीष देकर सप्रेम विदा किया।



9

हनुमान की रावण से भेंट एवं संवाद

हनुमान ने स्वयं को सर्वोत्तम रामदूत मानकर अपनी शक्ति का नमूना व संदेश रावण को भी दिखाने का संकल्प किया।

उन्होंने वाटिका में घुस कर तहलका मचा दिया। अनेक पेड़ों को जड़ से उखाड़ दिया। वहाँ स्थित विश्राम घरों तथा फव्वारों आदि को ध्वस्त कर दिया तथा असंख्य रक्षकों का संहार कर दिया। घनघोर आवाजें सुनकर तथा स्थिति देखकर अनेक राक्षस योद्धाओं ने हनुमान पर शस्त्रों से आक्रमण कर दिया। हनुमान ने झटपट सभी को यमलोक पहुँचा दिया।

रावण के दरबार में इस भीषण संहार की सूचना पहुँची। उसने अपने चुने हुए कुछ सेनापतियों और युद्ध कला में निपुण योद्धाओं को वाटिका की सुरक्षा के लिए तथा घुसपैठिये का संहार करने के लिए भेजा, परंतु सभी को मृत्यु का स्वाद चखना पड़ा।

इस भीषण हत्याकाण्ड से क्रुद्ध होकर रावण ने अपने सबसे छोटे पुत्र अक्षय कुमार को हनुमान से युद्ध करके उसे बंदी बनाकर लाने के लिए भेजा। हनुमान तथा अक्षय कुमार में भीषण युद्ध हुआ जिसमें अक्षय कुमार भी मारा गया।

एक वानर के हाथों अपने प्रतापी पुत्र की मृत्यु का समाचार सुनकर रावण तिलमिला उठा तथा स्वयं ही वानर की हत्या करने के लिए प्रस्थान करने के लिए तैयार हुआ। परंतु उसके बड़े बेटे मेघनाद ने, जिसने इन्द्र पर भी विजय पाई थी, अपने भाई की हत्या का बदला लेने के लिए जाने की अनुमति माँगी और अशोक वाटिका की ओर चल दिया।

दोनों में भीषण संग्राम छिड़ गया परंतु मेघनाद को अपनी विजय का विश्वास नहीं हुआ। अंत में उसने अपराजेय बाण 'ब्रह्मास्त्र' का प्रयोग किया।

हनुमान ने ब्रह्मास्त्र को प्रणाम करके स्वयं को बंदी बनाने की सहमति दे दी। उसी बंदी स्थिति में अनेक राक्षसों के द्वारा उसे रावण के दरबार में लाया गया।

रावण अपने सिंहासन पर विराजमान था। दरबार में उसके मंत्री, सेनापति, परामर्शदाता, विद्वत्जन तथा अन्य प्रमुख योद्धा उपस्थित थे। रावण बड़ी बेचैनी से हनुमान को मृत्यु-दंड देने के लिए मेघनाद की प्रतीक्षा कर रहा था।

हनुमान रावण के सामने एक अडिग चट्टान की भांति दरबार में शान से खड़े थे। रावण के प्रति उपेक्षा का भाव प्रकट कर रहे थे। रावण को ऊँचे सिंहासन पर बैठे देखकर हनुमान अपनी पूँछ को मोड़कर रावण से भी ऊँचा आसन बना कर उस पर बैठ गया। अब रावण को हनुमान का चेहरा देखने के लिए अपना सिर ऊँचा करना पड़ा।

रावण ने क्रोध पूर्वक पूछा, “तुम कैसे मूर्ख वानर हो जो मरना चाह रहे हो? तुम कौन हो? कहाँ से आये हो? तुम्हें यहाँ किसने और किस लिए भेजा है?”

हनुमान ने व्यंग्यात्मक वाणी से कहा, “दुष्ट मूर्ख प्राणी! मैं प्रभु श्रीराम का दूत हूँ। मैं तुम्हें माता सीता को कायरता पूर्ण दुष्टता पूर्वक अपहरण के अपराध का परिणाम भुगतने की चेतावनी देने आया हूँ। माता सीता को सम्मानपूर्वक श्रीराम को लौटा दो, श्रीराम तुम्हें क्षमा कर देंगे। अन्यथा मैं तुम्हें पुनः चेतावनी दे रहा हूँ कि केवल तुम्हारा ही नहीं तुम्हारी संपूर्ण राक्षस जाति का विनाश हो जायेगा।”

हनुमान की व्यंग्यात्मक एवं धृष्टतापूर्ण वाणी सुनकर दरबार में सभी का आह्वान करते हुए रावण ने पूछा, “क्या यहाँ एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं जो अपने शस्त्र से इस दुष्ट का वध कर दे?”

यह आह्वान सुनकर अनेक राक्षस शस्त्र लेकर उसे मारने के लिए आगे बढ़े।

संयोग से उस समय तक ब्रह्मास्त्र के बंधन का प्रभाव समाप्त हो चुका था। अतः एक छलांग लगाकर हनुमान ने सभी आक्रमणकारियों का वध कर दिया।

जब राक्षसों का एक अन्य दल आक्रमण करने के लिए आगे बढ़ा, रावण के छोटे भाई विभीषण ने आगे बढ़कर रावण से प्रार्थना की - “राजन! किसी दूत को मारना नैतिक दृष्टि से शोभनीय कार्य नहीं। यदि हमने इसे मार दिया तो राम तक हमारा संदेश कैसे



पहुँचेगा? अतः इस को थोड़ा सा घायल करके छोड़ देना चाहिए।” विभीषण थोड़ा सा रुककर पुनः बोला, “यह सर्वविदित है कि वानर की पूँछ उसकी बहुत बड़ी शक्ति होती है। अतः यदि इसकी पूँछ को आग लगा दी जाये तो वह अपनी जाति से निष्कारित कर दिया

जाएगा। अतः इस वानर से बदला लेने का यही योग्य उपाय होगा।”

दरबार में सभी विभीषण से सहमत हो गए।

इसके पश्चात् पुराने कपड़ों व तेल का प्रबंध किया गया ताकि उसकी पूँछ पर कपड़ा लपेट कर आग लगाई जा सके। परंतु ज्यों-ज्यों वे लोग पूँछ पर कपड़ा लपेटते गए, सूती व ऊनी पुराने व नए कपड़े मंगवा लिए गए, परंतु पूँछ का बढ़ना समाप्त ही नहीं हो पा रहा था। थक कर चूर होने पर सबने निर्णय किया कि पूँछ को तेल के बड़े ड्रम में डुबो कर आग लगा दी जाये।

सबकी सहमति से योजनानुसार पूँछ को आग लगा दी गई। ऐसा करके राक्षसों ने अपनी बरबादी को निकट बुला लिया।

हनुमान उछल-उछल कर चारों तरफ आग लगाने लगा। पूरी लंका जल कर राख हो गई। लोग सामूहिक रूप से जल कर मरने लगे। मरते समय वे सभी चिल्ला-चिल्ला कर पश्चाताप कर रहे थे तथा रावण को कोस रहे थे क्योंकि उसके द्वारा लगातार किये गये पापों के कारण यह परिस्थिति उपस्थित हुई थी।

हनुमान ने यह ध्यान रखा कि आग उस स्थान पर न पहुँचे जहाँ माता सीता साधना कर रही थीं। माता सीता की अनुमति लेकर वे रामेश्वरम् के लिए प्रस्थान कर गए।



10

हनुमान की रामेश्वरम् में वापसी

समुद्र तट पर उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे वानरों ने अचानक तीव्र जय-घोष सुना। तुरंत उन्होंने हनुमान को विजयी मुद्रा में आकाश मार्ग से लौटते देखा। हनुमान सभी से बारी-बारी गले मिले तथा उन्होंने माता सीता के साथ अपनी भेंट तथा लंका के विनाश का वर्णन विस्तार से किया।

तुरंत सभी वानर किष्किंधा के लिए चल पड़े ताकि वे अपनी सफलता की कहानी श्रीराम एवं सुग्रीव को सुना सकें।

क्योंकि वे सब भूखे एवं थके हुये थे, जब मार्ग में उन्हें सुग्रीव की वाटिका मिली, तो सभी वाटिका में चले गए। उन्होंने वहाँ पेट भरकर फल खाये तथा तालाब से पानी पिया। राक्षकों को मार भगाया तथा वाटिका का विनाश कर दिया। राक्षक सुग्रीव के पास दौड़कर पहुँचे और सारी घटना का वर्णन किया। यह सुनकर सुग्रीव अत्यंत प्रसन्न हुए।

सुग्रीव ने श्रीराम से कहा ‘प्रभु! हमारी सेना सफल होकर लौट आई है। निश्चित रूप से उन्होंने माता सीता का ठिकाना ढूँढ निकाला है। अन्यथा वे ऐसा ऊधम मचाने का दुस्साहस नहीं करते।

हनुमान, जामवंत और अंगद अन्य वानरों सहित श्रीराम के पास पहुँचे। हनुमान ने श्रीराम के चरण स्पर्श करके अपनी यात्रा काल में हुई प्रत्येक घटना का विस्तार पूर्वक वर्णन किया। उन्होंने श्रीराम को माता सीता का संदेश 'शीघ्र आकर रावण का वध करके मुझे ले जाइये' भी सुनाया।

श्रीराम ने हनुमान के वीरतापूर्ण कार्यों की प्रशंसा की तथा प्रसन्नता



के आँसुओं के साथ उन्हें गले लगाया। देवी सीता की दुख भरी परिस्थितियों को सुनकर वे ज़ोर-ज़ोर से आँसू बहाने लगे।

“ऐ कमलनयनी! तुम पृथ्वी पर सर्वश्रेष्ठ व सर्वसुंदरी राजकुमारी घोषित थीं, सभी वीर राजकुमारों की उपस्थिति में मैंने तुम्हारा वरण किया। तुम सदा ही मुझ पर दयालु एवं कृपालु रही हो। तुमने कभी भी अपनी वाणी या व्यवहार से किसी का दिल नहीं दुखाया। तुमने तो माता कैकेयी के बारे में कभी शिकायत नहीं की जिनके कारण तुम्हें ये कष्ट भोगने पड़े। मेरी प्राणों से भी प्यारी सखी! तुम्हारी शहद सी मधुर वाणी की गूँज अभी तक मैं सुन रहा हूँ। मैं कब तुम्हारे दर्शन करूँगा?”

श्रीराम की व्याकुल स्थिति को भाँपकर सुग्रीव ने उन्हें सान्त्वना दी और विश्वास दिलाया कि शीघ्र ही रावण व उसके संपूर्ण वंश का वध करके माता से मिलन होगा।

श्रीराम ने हनुमान को लंका का विस्तार से वर्णन करने के लिए प्रार्थना की। लंका की भूमि, भवनों, स्थापत्य कला की सुंदरता, किले के द्वारों, दीवारों आदि के निर्माण कला के बारे में भी विस्तार से वर्णन करने के लिए कहा। हनुमान ने मय असुर के द्वारा निर्मित लंका की भव्यता एवं सुंदरता का आकर्षक ढंग से वर्णन किया। मय असुर लंका का प्रमुख शिल्पकार एवं रावण के श्वसुर हैं।



युद्ध की तैयारी आरंभ

राम, लक्ष्मण, सुग्रीव, हनुमान तथा शेष वानर खड़े होकर समुद्र पार करने की योजना बनाने में व्यस्त हो गए।

नल तथा नील को समुद्र पर पुल बनाने का दायित्व सौंपा गया।

कार्य आरंभ करने से पूर्व श्रीराम लक्ष्मण के साथ धनुषकोटि स्थान पर गए। वहाँ शिवलिंग की स्थापना करके सफलता प्राप्ति हेतु पूजा-उपासना-प्रार्थना की। शिवजी श्रीराम के सम्मुख प्रकट हुए तथा उन्होंने निश्चित एवं दृढ़ संकल्प बद्ध होकर कार्य आरंभ करने की स्वीकृति दी।

तब श्री राम ने प्रस्थान के शुभ मुहूर्त की घोषणा की।

सभी समुद्र तट पर एकत्रित हुए। पुल का निर्माण आरंभ करने से पूर्व श्रीराम ने वरुण देव की उपासना करने का निश्चय किया ताकि समुद्र उन्हें मार्ग दे दे। श्रीराम ने कुश (घास के) आसन पर बैठकर तीन दिन तक उपवास करते हुए घोर तपस्या की। उन्होंने ऐसा अनुभव किया कि समुद्रों के स्वामी वरुण देव उनकी उपेक्षा कर रहे हैं। तब श्रीराम ने विद्रोह स्वरूप लक्ष्मण से धनुष बाण

लाकर उन्हें देने के लिए कहा। उन्होंने चेतावनी दी कि वे आग्नेयास्त्र से समुद्र को सुखा देंगे।

श्रीराम के क्रोध से भयभीत होकर वरुण देव प्रकट हुए और श्रीराम से क्षमा-याचना की। वरुण ने समुद्र को सुखा दिया। वानर सेना ने बीस दिनों में समुद्र पर पत्थरों, लकड़ी के शतीरों एवं रेत से सेतु (पुल) का निर्माण कर दिया।

इसी अन्तराल में रावण को सेतु बनाने की गतिविधियों के बारे में उसके जासूसों के माध्यम से जानकारी मिली। उसने अपनी मंत्री परिषद् एवं प्रमुख सभासदों को बुलाकर मंत्रणा की। संभावित युद्ध स्थिति को देखते हुए सभी प्रकार की सुरक्षात्मक तैयारियाँ की गईं। रावण ने लंका की सुरक्षा का दायित्व 'प्रभास' को सौंपा।

जब श्रीराम एवं उनके दल के लंका के प्रवेश द्वार पर पहुँचने का समाचार विभीषण को मिला, उन्होंने अपने बड़े भाई, लंकाधिपति रावण को चेतावनी व सलाह दी कि वे देवी सीता को श्रीराम को ससम्मान लौटाकर उनसे क्षमा-याचना करें। उन्होंने रावण को समझाया कि श्रीराम के बाणों के वेग को तो स्वयं भगवान शिव भी सहन नहीं कर पाते। इंद्रजीत (मेघनाद), रावण के ज्येष्ठ पुत्र ने आगे बढ़कर विभीषण की आलोचना की। उसने कहा कि विभीषण पूरी राक्षस जाति के लिए कलंक के समान हैं और शत्रु के पक्षधर हैं। रावण विभीषण की सद्भावना का विचार न करते हुए अत्यंत क्रोध में आकर विभीषण की हत्या करने के लिए तैयार हो गया।

विभीषण ने अनुभव किया कि रावण को दी हुई नेक सलाह उसके लिए विनाशकारी होगी। अतः वे वहाँ से पलायन करके श्रीराम की शरण में आ गए। वानर सेना के कुछ प्रमुखों ने विभीषण को शरण देने का विरोध किया। परंतु हनुमान ने तर्क संगत सलाह देकर उन्हें शांत किया। उन्होंने विभीषण को न्यायप्रिय, सदाचारी एवं अपने पक्ष के लिए सहायक एवं उपकारी होने का तर्क दिया। श्रीराम ने हनुमान के तर्क संगत विचारों का समर्थन करते हुए विभीषण को अपनी शरण में ले लिया।

युद्ध संहिता के अनुसार, युद्धारंभ से पूर्व किसी भी राजा के लिए अनिवार्य था कि वह विरोधी पक्ष को संभावित युद्ध को टालने से संबंधित प्रयत्नों एवं युद्ध के दुष्परिणामों के बारे में पूर्व जानकारी दे। इस गंभीर कार्य के लिए सर्वोत्तम वक्ता का चयन करना आवश्यक होता है। अतः इस कठिन कार्य के लिए युवराज अंगद का चयन किया गया।

अंगद ने रावण के दरबार में पहुँच कर उसे श्रीराम का संदेश सुनाया। “तुम्हारे पास दो ही पर्याय हैं। देवी सीता को श्रीराम को ससम्मान लौटाकर क्षमायाचना कर लो या युद्ध के भीषण परिणामों के लिए तैयार हो जाओ।” अंगद ने भरसक प्रयत्न किये कि रावण को युद्ध के भयंकर परिणामों को समझा कर युद्ध टालने की बात समझ में आ जाये। परंतु रावण ने अंगद की सलाह की उपेक्षा की। अतः युद्ध अपरिहार्य (अनिवार्य) हो गया।

युद्धारंभ होते ही इंद्रजीत, जो काले जादू की कला में प्रवीण

था, ने श्रीराम का नकली धनुष एवं सिर बनाया। उसने ‘सराम’ को सीता को पुष्पक विमान के द्वारा लाने का आदेश दिया। देवी सीता को वहाँ लाया गया। जब उन्होंने श्रीराम के कटे हुए सिर को देखा, तो वे मूर्छित हो गईं। परंतु बाद में ‘सराम’, जिसे इंद्रजीत की मायावी शक्ति के बारे में जानकारी थी, ने देवी सीता को सान्त्वना दी तथा बताया कि वह नकली (मायावी) सिर है।

इस अन्तराल में विभीषण ने जासूसों को लंका में भिजवाया ताकि वे जाकर युद्ध की तैयारी का गहन अध्ययन करके श्रीराम को उसकी जानकारी दें।

श्रीराम ने ‘सुवेल’ पर्वत पर डेरा डालने का निश्चय किया क्योंकि ‘सुवेल’ अतुलनीय सुंदर दृश्यों, स्वच्छ वातावरण तथा सुहावने मौसम के लिए विख्यात था। उस पर्वत पर अनेक वन्य पशुओं, उड़ते तथा चहचहाते पक्षीगण (अनेक प्रकार के रंग बिरंगे व पूर्ण विकसित फूलों) के कारण जीवंत एवं उल्लासपूर्ण वातावरण था।

वहाँ का जल शीतल एवं शुद्ध था। चारों तरफ फव्वारे शोभायमान हो रहे थे। श्रीराम के लिए वहाँ सबसे बड़ी सुविधा यह थी कि वहाँ से लंका की राजधानी तथा वहाँ चल रही युद्ध संबंधी तैयारियाँ उन्हें स्पष्ट दिखाई दे रही थीं।

युद्ध के प्रथम दिन श्रीराम, लक्ष्मण एवं विभीषण के नेतृत्व में वानर सेना पूर्णतया तैयार थी, जबकि रावण तथा उसकी मंत्री परिषद् के नेतृत्व में शत्रु सेना अपनी शक्ति के दंभ में निश्चित थी। रावण को सेना की प्रथम पंक्ति में देखकर सुग्रीव उसकी

तरफ झपटकर उसके दस सिरों पर सवार हो गया। रावण ने उससे बचने का भरसक प्रयत्न किया, परंतु सुग्रीव ने उसके शरीर पर अनेक घाव कर दिये तथा अंत में उसके कान पर दांतों से काट कर वह छलांग लगाकर अपनी सेना में लौट आया।

श्रीराम ने वानर सेनापतियों—सुषेण, नील, नल, अंगद, सारभ, द्विविदा, हनुमान, सनुप्रस्त, ऋषभस्कन्ध आदि को आक्रमण करने का आदेश दिया। इंद्रजीत ने उनके आगे बढ़ने में बाधा उपस्थित की। वह अपने काले जादू के कारण अदृश्य रूप से आक्रमण करता था। उसने श्रीराम एवं लक्ष्मण के शरीरों में अनेक मर्म स्थलों को सर्प बाणों से घायल कर दिया। दोनों खून से लथ-पथ होकर पृथ्वी पर अचेत होकर गिर पड़े। सूर्य वंश के दोनों स्तंभों की यह दशा देखकर वानर सेना हतोत्साहित हो गयी।

उसी समय भगवान विष्णु के वाहन 'गरुड़' प्रकट हुए। उन्होंने श्रीराम व लक्ष्मण को सर्पों के बंधन से मुक्त कराया। वे दोनों मूर्च्छित अवस्था को त्याग कर पुनः खड़े हुए।

रावण का एक सेनापति दुर्मुख पश्चिमी किले की सुरक्षा में नियुक्त किया गया। वानरों ने कड़ा संघर्ष किया और वे किले में प्रवेश कर गए। दोनों पक्षों के अनेक योद्धा मारे गए। दुर्मुख ने हनुमान पर आक्रमण किया परंतु हनुमान ने उसके रथ के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। तब दुर्मुख ने हनुमान पर 'गदा' से प्रहार किया। परंतु हनुमान ने प्रहार को रोककर अपनी गदा से दुर्मुख को यमलोक में भेज दिया।

वानर सेनापति अंगद ने दक्षिणी द्वार से प्रवेश किया तथा 'वज्रदमस्त्र' को ललकारा। भीषण युद्ध में अंगद ने अपनी खड्ग से उसका सिर काट दिया।

रावण के एक अन्य सेनापति 'अकंपन' अपनी विशाल सेना के साथ पश्चिमी द्वार से बाहर निकला। अपशकुनों की चिंता न करते हुए उसने हनुमान पर आक्रमण किया। भयंकर युद्ध में हनुमान ने उसका वध कर दिया।

पूर्वी द्वार से 'प्रहस्त' ने वानर सेना पर आक्रमण किया। नील ने उसे टक्कर दी। एक विशाल चट्टान को उखाड़कर प्रहस्त के सिर पर प्रहार किया। उसके सिर के टुकड़े-टुकड़े हो गए और वह स्वर्ग सिधार गया।

प्रहस्त के वध से निराश एवं दुखी होकर रावण ने स्वयं युद्ध स्थल पर प्रवेश किया। उसके साथ इंद्रजीत, अतिकाय, महोदर, पिशाच, त्रिशिरा, कुंभ, निकुंभ, नरांतक आदि अनेक योद्धा थे। श्रीराम से रावण का युद्ध हुआ। उसके शरीर पर अनेक घाव हुए। अंत में रावण युद्ध से पलायन कर गया।

रावण ने अपने भाई 'कुम्भकरण' को जगाने का आदेश दिया। वह नौ दिन युद्ध के बाद भी सो रहा था।

कुंभकरण ने अपने बड़े भाई रावण तथा छोटे भाई विभीषण के साथ घोर तपस्या से भगवान ब्रह्मा की उपासना की थी। ब्रह्मा जी उनकी घोर तपस्या के फलस्वरूप प्रसन्न हुए। उन्होंने तीनों भाइयों से वर माँगने के लिए कहा। रावण ने कहा, "भगवन् मैं किसी के

द्वारा मारा नहीं जाऊँ। अमर हो जाऊँ।” ब्रह्मा जी ने कहा, “यह असंभव है, कुछ और मांगो।” रावण ने कहा, “मुझे मानव जाति से कोई भय नहीं। किसी अन्य के द्वारा मेरा वध न हो।” ब्रह्मा जी ने ‘तथास्तु’ कहकर स्वीकार कर लिया। फिर उन्होंने कुंभकरण की इच्छा पूरी। कुंभकरण ‘इंद्र’ का स्थान मांगना चाहता था परंतु जबान फिसल जाने से उसके मुख से ‘निद्रा’ शब्द सुनाई दिया। ब्रह्मा जी ने उसके जीवन भर की निद्रा का वर दे दिया। परंतु रावण ने ब्रह्मा जी से प्रार्थना करके उसके लिए ‘छः माह की निद्रा तथा छः माह का जागरण’ का वर मांग लिया। ‘वर’ को बदलने के लिए ब्रह्मा जी ने एक ‘शर्त’ रख दी। यदि छः माह की निद्रा पूरी होने से पूर्व उसे उठाया गया तो उसकी मृत्यु निश्चित रूप से होगी।

कुंभकरण बहुत भुक्खड़ था।

कुंभकरण को जगाना अत्यंत कठिन था। सैकड़ों लोगों ने ढोल नगाड़े बजाए। अन्य अनेक ऊँची आवाज़ पैदा करने वाले वाद्य भी बजाए गए। परंतु कुंभकरण पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उसके कानों में अनेक बड़े-बड़े पात्रों का पानी डाला गया। पर सब बेकार। विशालकाय हाथियों को उसके सीने (छाती) पर चलाया गया। पुनः कोई परिणाम नहीं निकला। हाथियों से उसके नाक के बाहर के बाल खिंचवाए गए। इस कारण कई हाथियों को अपनी ‘सूँड’ गवानी पड़ी। अंत में कई दिनों के कठिन परिश्रम के पश्चात् वे कुंभकरण को जगाने में सफल हुए।

कुंभकरण ने अपने भाई रावण के पास जाकर उसे प्रणाम

किया। रावण ने उसे सारा घटना-क्रम सुनाया। यह सुनकर कि विभीषण श्रीराम की शरण में चला गया है, कुंभकरण को बहुत अच्छा लगा और उसने चैन की सांस ली क्योंकि वह जानता था कि श्रीराम स्वयं भगवान हैं। उसने रावण को देवी सीता को ससम्मान लौटाने के लाभ समझाने का प्रयत्न किया। उसकी सलाह से नाराज़ होकर रावण ने उसे वहाँ से चले जाने एवं सो जाने के लिए कहा। परंतु रावण का साथ देना अपना कर्तव्य समझकर कुंभकरण ने श्रीराम से युद्ध करने की स्वीकृति दे दी।

उसने घोर युद्ध में वानर सेना को बहुत बड़ी क्षति पहुँचाई। उन्हें हतोत्साहित कर दिया। अंगद ने बीच में आकर उनका उत्साह बढ़ाया। हनुमान ने एक चट्टान से प्रहार करके कुंभकरण को घायल कर दिया। कुंभकरण ने अपने त्रिशूल से हनुमान पर प्रहार किया। यह देखकर अंगद ने कुंभकरण पर आक्रमण किया परंतु कुंभकरण ने अंगद को अचेत कर दिया। तब उसने सुग्रीव पर अपने त्रिशूल का प्रहार किया। हनुमान ने उसे रास्ते में रोककर नष्ट कर दिया। तब कुंभकरण ने हनुमान पर प्रहार करके उसे अचेत कर दिया।

यह देखकर लक्ष्मण बीच में कूद पड़े तथा कुंभकरण के प्रहार से सब को बचा लिया। परंतु कुंभकरण लक्ष्मण को छोड़कर एक बड़ी चट्टान लेकर श्रीराम की ओर बढ़ गया।

ज्योंही वह श्रीराम पर प्रहार करने लगा, श्रीराम ने अपने बाण से उसका एक बाजू काट दिया, चट्टान को दूसरे हाथ में लेकर

वह आक्रमण के लिए श्रीराम की ओर बढ़ा। श्रीराम ने उसका दूसरा बाजू भी काट दिया। इसी प्रकार उन्होंने क्रमशः दोनों टांगें काटीं और अंत में उसका वध कर दिया।

कुंभकरण के वध के साथ रावण की आधी सेना समाप्त हो गई।

अंत में रावण श्रीराम के सामने स्वयं आया। श्रीराम-रावण युद्ध के समय हनुमान ने रावण की सेना का भारी विनाश कर दिया। उसके दिग्गज देवांतक, त्रिशिरा एवं निकुंभ भी मारे गए।

जब लक्ष्मण ने रावण के एक पुत्र अतिकेय का वध कर दिया, इंद्रजीत ने अदृश्य रहकर आक्रमण करना आरंभ कर दिया। वानरों का भीषण संहार हुआ। उसने श्रीराम लक्ष्मण सहित वानर सेना के बड़े भाग को अचेत कर दिया। बहुत बड़ी संख्या में वानर मारे गए या घायल हो गए।

विभीषण और हनुमान इंद्रजीत के प्रहार से बचे हुए थे। उन्होंने मशाल लेकर युद्ध भूमि में घूमना आरंभ किया। वे जामवन्त को ढूँढ़ रहे थे। जामवन्त युद्ध भूमि में मृतकों के बीच आँखें बंद करके बैठा हुआ मिला। वह आँखें खोल नहीं पा रहा था। विभीषण उसके पास पहुँचे और प्रसन्नता पूर्वक बोले, “वानरों के पितामह! आप कुशल हैं?” जामवन्त बोले, “मैं तो कुशल हूँ, पर क्या लाभ? क्या हनुमान कुशल हैं?”

विभीषण ने पूछा, “विशेष रूप से हनुमान के बारे में ही क्यों पूछा?” जामवन्त ने कहा, “यदि हनुमान जीवित नहीं तो पूरी वानर सेना सहित श्रीराम और लक्ष्मण भी जीवित नहीं बचेंगे। यदि

हनुमान जीवित हैं तो सभी जीवित रहेंगे।”

हनुमान ने कहा, “मैं आपका विनम्र शिष्य आपके सामने उपस्थित हूँ।”

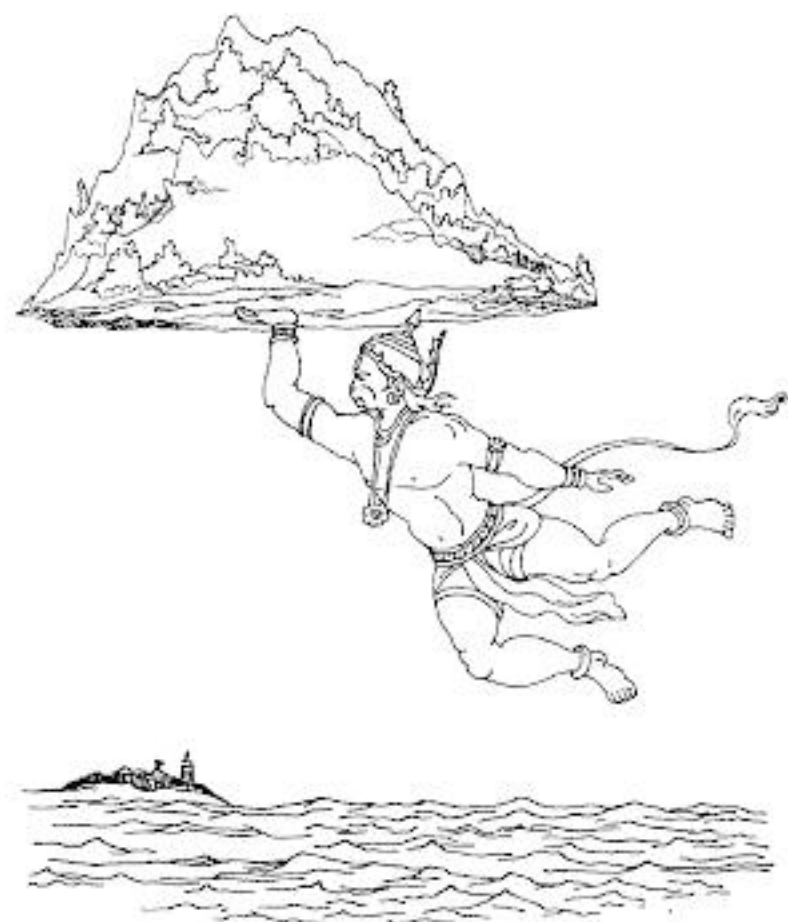
जामवन्त अति प्रसन्न होकर बोले, “पुत्र हनुमान! तुरंत हिमालय पर्वत पर जाकर वहाँ से चार प्रकार की प्रकाश मान (चमकने वाली) जड़ी-बूटियाँ तुरंत लाओ। वे हैं मृत-संजीवनी, विषलय कारिणी, संतान कारिणी तथा संधिनी। ये औषधियाँ हमारी सेना के मूर्छित सैनिकों के लिए प्राण-रक्षा का कार्य करेंगी।”

हनुमान मध्य रात्रि तक हिमालय पहुँचे। परंतु वहाँ जाकर वे उन औषधियों के नाम भूल गए। समय नष्ट न करते हुए हनुमान ने पर्वत का वह भाग ही उठा लिया और शीघ्रता से लौट आए। औषधियों की सुगंध से श्रीराम, लक्ष्मण तथा शेष मूर्छित वानर सेना सहित सभी पुनः होश में आ गए।

सुग्रीव ने हनुमान को लंका को भस्म करने का आदेश दिया। हनुमान ने लंका को आग के हवाले कर दिया। प्रलयकाल के समान ही असंख्य राक्षस आग में भस्म हो गए। अनेक भवन, दीवारें व द्वार ध्वस्त हो गए। जिन राक्षस महिलाओं ने पति पुत्र या भाई खोए थे, वे सब रावण व उसके परिवार को कोसने लगीं।

इंद्रजीत वानर सेना के सामने सीता का खून से लथपथ शीश लेकर प्रकट हुआ। वह शीश देखकर श्रीराम व लक्ष्मण मूर्छित हो गए तथा वानर सेना युद्ध के लिए रुचि खो बैठी।

विभीषण को जब इस काण्ड का पता चला तो वे वहाँ पहुँचे



तथा सभी को बताया कि वह सिर बनावटी था जो मायावी इंद्रजीत ने बनाया था। उन्होंने सभी को जानकारी दी कि “इंद्रजीत ‘निकुम्भिला’ में विशेष पूजा पूर्ण करने के लिए समय प्राप्त करना चाहता है। अतः उसने यह काण्ड किया है ताकि सभी घबरा कर युद्ध से विरत हो जायें और वह अपनी पूजा पूर्ण करके अधिक शक्तिशाली एवं अजेय हो जाए।”

विभीषण के परामर्श से हनुमान तथा अंगद निकुम्भिला पहुँचे जहाँ इंद्रजीत पूजा कर रहा था। उन्होंने पूजा भंग करने के लिए पूजा स्थल की ओर पत्थर, लकड़ी के टुकड़े तथा अन्य वस्तुएँ फेंकीं। परंतु इंद्रजीत इस सब से अनभिज्ञ (अनजान) अपनी पूजा में व्यस्त रहा। तब दोनों इंद्रजीत की माता मंदोदरी को उनके महल से उठाकर पूजा स्थल की ओर ले आये। मन्दोदरी ने इंद्रजीत को अपनी रक्षा के लिए चिल्ला-चिल्ला कर पुकारा। इंद्रजीत को माँ की पुकार सुनाई दे गई। अतः पूजा अधूरी छोड़कर उसे पुनः युद्ध में व्यस्त होना पड़ा।

लक्ष्मण तथा इंद्रजीत में तीन दिन तीन रात्रि तक भयंकर युद्ध हुआ। अंत में लक्ष्मण ने इंद्रजीत का संहार कर दिया। इंद्रजीत की मृत्यु के पश्चात् निश्चित रूप से रावण बिल्कुल अकेला हो गया।

अगले दिन श्रीराम से युद्ध करने रावण स्वयं आया। श्रीराम ने रावण के रथवान, रथ और घोड़ों को समाप्त कर दिया। रावण को भी शस्त्र विहीन कर दिया। अब रावण पृथ्वी पर रथविहीन, शस्त्र विहीन होकर असहाय स्थिति में खड़ा था। उसको इस विकट परिस्थिति में देखकर श्रीराम ने उसे कहा कि वह लौट जाये, विश्राम करके अगले दिन पुनः पूरी तैयारी के साथ आये। रावण लज्जित होकर दसों सिरों को झुकाकर लौट गया।

अगले दिन रावण नए रथ में नए उत्साह के साथ समस्त शस्त्रों सहित उपस्थित हुआ।

रावण को रथ पर तथा श्री राम को बिना रथ के देखकर

सीता की अग्नि-परीक्षा

रावण के धराशायी होने पर विभीषण दुख को सहन नहीं कर सके। वे रोकर कहने लगे, “ओ भाई! मुझे यह दिन भी देखना था? मैंने तुम्हें युद्ध के भीषण परिणाम के बारे में चेतावनी दी थी, पर तुमने मेरी एक न सुनी।”

विभीषण को सांत्वना देते हुए श्रीराम ने कहा, “विभीषण! पश्चाताप नहीं करो। तुम्हारे बड़े भाई एक महाप्रतापी योद्धा थे। वे अंतुलनीय वीर थे तथा आप वीरों के स्थान पर शोभायमान हो चुके हैं। धार्मिक रीति के अनुसार उनका अंतिम संस्कार कराइये। धैर्य रखिए।”

श्रीराम ने मन्दोदरी को भी सांत्वना दी।

विधिपूर्वक अंतिम संस्कार के पश्चात् विभीषण का राज्याभिषेक श्रीराम, लक्ष्मण, प्रमुख वानर सेनापतियों तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में हुआ।

विभीषण ने आदेश दिया कि माता सीता को स्नान, शृंगार के पश्चात् दुल्हन के वेश एवं आभूषणों सहित ससम्मान लाया जाए।

हनुमान अशोक वाटिका में गए तथा माता सीता को श्रीराम के



हनुमान ने श्रीराम को अपने कंधे पर बिठा लिया। श्रीराम ने उस दिन रावण का वध कर दिया।





द्वारा रावण के वध की सूचना दी।

सराम तथा अन्य राक्षस महिलाओं ने माता सीता को भली भाँति तैयार किया तथा श्रीराम के सम्मुख लाई। यद्यपि श्रीराम

जानते थे कि देवी सीता पवित्र एवं निर्दोष थीं, परन्तु अपनी पवित्रता सबके सामने सिद्ध करने के लिए उन्हें अग्नि-परीक्षा देने के लिए कहा।

अग्नि प्रज्वलित की गई। ब्राह्मण वर्ग ने औपचारिक विधिपूर्ण की तथा अग्नि को प्रचंड रूप दिया गया।

देवी सीता को श्रीराम ने आदेश दिया कि वे अग्नि में प्रवेश करके अपनी पवित्रता का प्रमाण दें। सीता जो देवी लक्ष्मी का अवतार थीं, ने निस्संकोच अग्नि में प्रवेश किया (छलांग लगा दी)। उन्होंने प्रार्थना की, “यदि मैंने कभी स्वप्न में भी अपने पति श्रीराम के अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति का ध्यान किया हो तो मुझे अग्नि जलाकर भस्म कर दे।”

सभी श्वास रोक कर स्तब्ध होकर प्रार्थना कर रहे थे। सभी ने आश्चर्य पूर्वक देखा कि अग्नि देव देवी सीता को अपने हाथों में उठाकर अग्नि से बाहर आये और श्रीराम से कहा, “प्रभु राम! माता सीता पूर्ण निर्मल एवं पवित्र हैं। इन्हें स्वीकार कीजिए। इनका स्पर्श पाकर मैं सबको शुद्ध करने वाला अग्नि देव स्वयं भी अधिक शुद्ध एवं पवित्र हो गया हूँ।”

श्रीराम ने देवी सीता को स्वीकार किया। वहाँ खड़े सभी प्रसन्नतावश अपने आँसुओं को रोक नहीं पाए।

विभीषण ने श्रीराम से प्रार्थना की कि वे उन्हें अकेला छोड़कर न जाएँ। वे लंका में उन सबके मार्गदर्शक व नेता के रूप में लंका के राजा के रूप में लंका में ही रहें। श्री राम ने धन्यवाद

पूर्वक उनकी प्रार्थना को अस्वीकार किया। उन्होंने विभीषण से कहा कि वे अपने जन्म सिद्ध अधिकार के रूप में लंका का शासन संभालें। तब विभीषण श्री राम का वियोग नहीं सह पाये और लक्ष्मण की ओर गए। वे जानते थे कि श्रीराम लक्ष्मण की प्रार्थना को अस्वीकार नहीं कर पाएँगे। अतः उन्होंने लक्ष्मण से श्रीराम को मनाने की प्रार्थना की। उन्हें आशंका थी कि भरत श्रीराम का स्वागत नहीं करेंगे।

जब लक्ष्मण ने श्रीराम से लंका का राज्य संभालने की बात की तो श्रीराम ने उत्तर दिया—

“अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते (मुह्यते)।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्णादपि गरीयसि।।

प्रिय भाई! यह स्वर्ण से परिपूर्ण लंका मुझे लुभा नहीं सकती। जननी तथा जन्म भूमि स्वर्ग से भी अधिक श्रेष्ठ हैं।”

श्रीराम ने सुग्रीव से भी भरत की प्रतिज्ञा के बारे में बताया कि भरत ने प्रतिज्ञा की है कि यदि हम चौदह वर्ष के तुरंत बाद अयोध्या नहीं पहुँचेंगे तो वह आत्मदाह कर लेंगे।

श्रीराम ने हनुमान से कहा कि वह शीघ्र जाकर भरत को जानकारी दे दें।

विभीषण ने श्रीराम, सीता, लक्ष्मण, सुग्रीव, हनुमान तथा वानर सेना, प्रमुख राक्षसों एवं स्वयं के लिए अयोध्या जाने का प्रबन्ध कर दिया। पुष्पक विमान मंगवाया गया। सभी उसमें सवार हो गए।



13

राम-भरत का शुभ पुनर्मिलन

14 वर्षों का अंतिम दिन आ गया। परंतु श्रीराम के लौटने के कोई संकेत नहीं मिल रहे थे।

भरत ने भाई शत्रुघ्न का आर्त्तिगान किया तथा उसे कहा, “भाई! अब और प्रतीक्षा करने का लाभ नहीं है। हमारे स्वामी ने हमें धोखा दे दिया है। अग्नि प्रज्वलित करो, मैं आत्मदाह करूँगा।”

शत्रुघ्न ने अग्नि तैयार की। भरत अग्नि की परिक्रमा करके छलांग लगाने को तैयार हुआ ही था कि अचानक उसने ‘जय श्रीराम’ का घोष सुना।

उसने आकाश की ओर आश्चर्य पूर्वक देखा। उसे एक छोटी-सी आकृति आकाश में उड़ती हुई पृथ्वी की ओर उतरते हुए दिखाई दी। आकृति धीरे-धीरे बड़ी होती गई तथा निकट आती गई।

वह आकृति भरत के समीप आकर रुकी। वह एक वानर था। हनुमान ने अपना परिचय श्रीराम के सेवक एवं परम भक्त के रूप में कराया। उन्होंने भरत को बताया कि श्रीराम पूरी वानर सेना के साथ शीघ्र ही नन्दीग्राम पहुँचने वाले हैं।

भरत ने हनुमान का आर्त्तिगान किया और बड़ी आतुरता से

श्रीराम से संबंधित सभी घटनाओं को विस्तार से बताने की प्रार्थना की और हनुमान ने सब कुछ विस्तार से वर्णन किया। संपूर्ण कथा सभी ने एकाग्र होकर सुनी।

तभी पुष्पक विमान श्रीराम, लक्ष्मण, सीता तथा अन्य सभी को लेकर वहाँ उतरा। सभी एक दूसरे से प्रसन्नता के आँसू बहाते हुए मिले।



श्रीराम एवं सीता का राज्याभिषेक कुल गुरु वसिष्ठ के श्रेष्ठ नेतृत्व में कराने की तैयारियाँ आरंभ की गईं। राज्याभिषेक के पश्चात् सभी को बहुमूल्य उपहार दिये गए।

सुग्रीव का आलिङ्गन करते हुए भरत ने कहा, “हम राजा दशरथ के चार पुत्र थे। अब हम पाँच हो गए हैं।”

माता सीता को बहुमूल्य हीरों की अति सुंदर माला भेंट की गई। अपने स्वामी से वह भेंट स्वीकार करके उन्होंने हनुमान की तरफ देखा। श्रीराम उनका भाव समझकर उनसे बोले कि वे जिसे चाहें, माला भेंट में दे सकती हैं।

देवी सीता ने वह माला हनुमान को दे दी। हनुमान की प्रसन्नता का पारावार न रहा।

श्रीराम ने हनुमान को अलग से बुलाकर कहा, “पुत्र! माँगो जो चाहो।”

हनुमान ने कहा, “भगवन! मैं केवल एक ही वरदान माँगना चाहता हूँ। जब तक लोग राम-नाम का उच्चारण करते रहें, तब तक मैं जीवित रहूँ। जहाँ व जब कहीं राम-नाम का उच्चारण हो, मैं वहाँ उपस्थित रहूँ। आपका दिव्य नाम सुनने की मेरी प्यास कभी नहीं बुझेगी।”

श्रीराम ने उसे, ‘चिरंजीवी’ होने का अर्थात् अमर होकर श्रीराम-भक्तों में सदा रहने का वरदान दे दिया।





COLLECTION OF VARIOUS
-> **HINDUISM SCRIPTURES**
-> **HINDU COMICS**
-> **AYURVEDA**
-> **MAGZINES**

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with

By
Avinash/Shashi

**(creator of
hinduism
server)**



KAPWING

उपसंहार

श्री हनुमान की राम भक्ति अतुलनीय है। वे ध्रुव, प्रह्लाद एवं नारद से भी अधिक बड़े भक्त हैं।

इस बात को सिद्ध करने के लिए अनेक प्रमाण हैं। श्रीराम के राज्याभिषेक के महोत्सव पर सभी को अनेक उपहार दिये गए। देवी सीता को एक मोतियों की अति सुंदर माला भेंट की गई। वह माला सीता जी ने हनुमान को भेंट कर दी। उस बहुमूल्य माला को पाकर हनुमान प्रसन्नता से नाचने लगे।

श्रीराम ने हनुमान से मनवांछित वर माँगने के लिए कहा।

हनुमान ने हाथ जोड़कर कहा, “प्रभु! जब तक राम-नाम रहे, मैं भी जीवित रहूँ। मैं जितना भी राम-नाम का पान करूँ, मेरी प्यास कभी न बुझे। जहाँ-जहाँ राम-नाम का उच्चारण हो, मैं वहाँ अदृश्य रूप में उपस्थित रहूँ। मुझे अन्य कोई वरदान नहीं चाहिए।”

श्री राम ने उन्हें वह वरदान दे दिया।

महाभारत के ‘वनपर्व’ में भीम सेन की हनुमान से अनापेक्षित तथा विचित्र ढंग से भेंट हुई। भेंट के अंत में जब वे बिछुड़ने वाले थे, हनुमान ने भीमसेन को सांत्वना दी। उन्होंने कहा कि ‘युद्ध के

अंत में विजय तुम्हारी ही होगी। जब तुम युद्ध भूमि में सिंह-गर्जना करोगे, मैं भी तुम्हारे साथ गर्जना करूँगा। इसकी गूँज कौरवों के हृदयों को कंपायमान करेगी। मैं तुम्हारे भाई अर्जुन के ध्वज के ऊपर उपस्थित रहूँगा। और कौरव सेना का संहार करूँगा।

इस प्रकार कहकर हनुमान ने प्रस्थान किया।

जरा ध्यान से विचार करें एक प्रकार से भीम हनुमान का भाई था। फिर भीम के ध्वज के स्थान पर हनुमान ने अर्जुन के ध्वज को वरीयता क्यों दी?

यहाँ हनुमान की प्रगाढ़ भक्ति प्रकट होती है। क्योंकि अर्जुन का रथ स्वयं भगवान कृष्ण (अर्थात् भगवान राम) संभाल रहे थे।

